Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095
doi :https://doi.org/10.32628/GISRRJ

उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में मौजूद जेंडर संबंधित मुद्दों को समझने में हिंदी की पाठ्यपुस्तकों की भूमिका

मो. फैसल (Mohd Faisal)
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आई. ए. एस. ई. विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number : 25-38

Publication Issue :
July-August-2025

Article History
Accepted : 25 June 2025
Published : 10 July 2025

सारांश :- भारतीय शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी) द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि कक्षा VI से X तक की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की बात करें, तो हम कह सकते हैं कि ये पाठ्यपुस्तकें न केवल विद्यार्थियों को देश-विदेश के समाज, राजनीति, भूगोल, अर्थशास्त्र और इतिहास की गहरी समझ प्रदान करती हैं, बल्कि इन पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से जेंडर (लिंग) संबंधी विभिन्न मुद्दों पर भी विद्यार्थियों से अत्यंत मार्मिकता से चर्चा की जा सकती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 में कई स्थानों पर स्पष्ट अंत: अनुशासनात्मक चिंतन पर विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 में कई स्थानों पर स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि हमको विभिन्न विषयों को अलग-अलग इकाइयों के रूप में पढ़ाने के बजाय, उन्हें एक समग्र दृष्टिकोण से पढ़ाया जाना चाहिए, ताकि छात्र ज्ञान को खंडित रूप में न देखें, बल्कि उसे एक-दूसरे से जुड़ा हुआ समझें। अत: प्रस्तुत लेख एन.सी.एफ - 2005 के इसी प्रावधान को ध्यान में रखकर इस बात का पता लगाने का प्रयास करता है कि हिंदी की पाठ्यपुस्तकें किस प्रकार सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में मौजूद जेंडर सम्बंधित मुद्दों को भलीभांति समझने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

मुख्य शब्द :- एनसीईआरटी (NCERT), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा - 2005 (NCF-2005), सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकें, जेंडर (लिंग) मुद्दे, अंत: अनुशासनात्मक चिंतन (Interdisciplinary Approach)

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

भूमिका: भारतीय शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी) द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय है। अपनी विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के कारण वर्तमान समय में इन्हें भारत में स्कूली शिक्षा का आधारभूत स्तंभ भी माना जाता है। यदि कक्षा VI से X तक की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की बात करें, तो हम कह सकते हैं कि ये पाठ्यपुस्तकें न केवल विद्यार्थियों को देश-विदेश के समाज, राजनीति, भूगोल, अर्थशास्त्र और इतिहास की गहरी समझ प्रदान करती हैं, बल्कि इन पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से जेंडर (लिंग) संबंधी विभिन्न मुद्दों पर भी विद्यार्थियों से अत्यंत मार्मिकता से चर्चा की जा सकती है, जैसे कि जेंडर रूढ़िवादिता, लैंगिक भेदभाव , कार्य विभाजन में जेंडर की भूमिका, घरेलू हिंसा, कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता और इतिहास में महिलाओं का योगदान इत्यादि। यदि हम राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 (एन.सी.एफ - 2005) का अध्ययन करें, तो हमको ज्ञात होगा कि इस दस्तावेज़ में कई स्थानों पर विषयों के एकीकरण (Integration of Subjects) और अंत: अनुशासनात्मक चिंतन पर विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 में कई स्थानों पर स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि हमको विभिन्न विषयों को अलग-अलग इकाइयों के रूप में पढ़ाने के बजाय, उन्हें एक समग्र दृष्टिकोण से पढ़ाया जाना चाहिए, ताकि छात्र ज्ञान को खंडित रूप में न देखें, बल्कि उसे एक-दूसरे से जुड़ा हुआ समझें। (एन.सी.एफ - 2005, पृष्ठ संख्या- 34, 43 तथा 50), एन.सी.एफ - 2005 के आरम्भ (सार-संक्षेप में) में ही इस बात की सिफारिश की गई है कि विषयों की दीवारें नीची कर देनी चाहिए और विभिन्न विषयों को आपस में जोड़कर समझने और समझाने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जैसे गणित को विज्ञान से तथा विज्ञान को पर्यावरण से संबद्ध करके समझा जा सकता है। इसीप्रकार, भाषा को सभी विषयों से जोड़कर पढ़ाने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 (एन.सी.एफ - 2005) में स्पष्ट शब्दों में उल्लेखित है कि **"भविष्य की पाठ्यपुस्तकों की संकल्पना और रूपरेखा इसतरह से होनी चाहिए, जो विभिन्न विषयों के ज्ञान और अनुभवों को समाकलित करे, जिससे ज्ञान को आत्मसात करना संभव हो पाए। उदाहरण के लिए, माध्यमिक स्कूल की जिस पाठ्यपुस्तक में राजस्थान के इतिहास और मीराबाई का उल्लेख हो, उसमें मीराबाई का एक भजन भी शामिल किया जाए और यह भी बताया जाए कि यह भजन कहाँ से मिला।" (एन.सी.एफ – 2005, पृष्ठ संख्या- 105)**

इसप्रकार कहना अनुचित न होगा कि एन.सी.ई.आर.टी की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न स्तरों पर वर्णित जेंडर संबंधी मुद्दों को पढ़ने-पढ़ाने में भी एन.सी.एफ - 2005 के इसी प्रावधान को ध्यान में रखना चाहिए। निश्चित रूप से जेंडर से संबंधित विभिन्न मुद्दों को भलीभांति समझने में एन.सी.ई.आर.टी की हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तकें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर संबंधी मुद्दे : उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 10 तक) तक की एन.सी.ई.आर.टी की सामाजिक विज्ञान की विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर से संबंधित कई महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया गया है, जो विद्यार्थियों को लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशील बनाने में मदद करते हैं। सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के कुछ पाठ जेंडर असमानता या रूढ़िवादी विचारधारा पर प्रकाश डालते हैं, तो कुछ में जेंडर-भूमिकाओं और स्त्री-पुरुष के बीच पाए जाने वाले असमान श्रम विभाजन की बात होती है। कुछ पाठ पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता की बात करते हैं, तो कुछ पाठों में महिला सशक्तिकरण और इतिहास में महिलाओं के योगदान की भी बात होती है।

विभिन्न स्तरों की सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित लिंग संबंधित विभिन्न पाठों को नीचे दी गई सारणी के माध्यम से समझा जा सकता है, जो निम्नवत् है –

सारणी

कक्षा	पाठ्यपुस्तक का नाम	पाठ का नाम
कक्षा-6	सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन – I (Social and Political Life- I)	अध्याय 2: विविधता एवं भेदभाव (Diversity and Discrimination)
कक्षा-7	सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन – II (Social and Political Life-II)	अध्याय 4: लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (Growing up as Boys and Girls)
कक्षा-7	सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन – II (Social and Political Life-II)	अध्याय 5: औरतों ने बदली दुनिया (Women change the world)
कक्षा-8	सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन – III (Social and Political Life-III)	अध्याय 5: हाशियाकरण की समझ (Understanding Marginalisation)
कक्षा-8	हमारा अतीत – III (Our Past- III)	अध्याय 5: जब जनता बग़ावत करती है: 1857 और उसके बाद (When People Rebel: 1857 and After)
कक्षा-8	हमारा अतीत – III (Our Past- III)	अध्याय 7: महिलाएँ, जाति एवं सुधार (Women, Caste and Reform)
कक्षा-10	लोकतांत्रिक राजनीति – II (Democratic Politics - II)	अध्याय 3: जाति, धर्म और लैंगिक मसले (Gender, Religion and Caste)

यह सारणी दर्शाती है कि एन.सी.ई.आर.टी की सामाजिक विज्ञान की विभिन्न स्तरों की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर से संबंधित विभिन्न ऐसे पाठ विद्यमान हैं जो विद्यार्थियों को समाज में व्याप्त जेंडर संबंधित आयामों और विभिन्न प्रकार की लैंगिक असमानताओं को गहराई से समझने और उनके प्रति संवेदनशील बनने में मदद करते हैं। अत: राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 के आलोक में जेंडर से जुड़े इन विभिन्न मुद्दों को हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में वर्णित विभिन्न कविताओं और कहानियों की सहायता से पढ़ाया जाना चाहिए, जिसका प्रयास यहाँ किया जा रहा है।

सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में वर्णित जेंडर संबंधित मुद्दों को समझने में हिंदी की पाठ्यपुस्तकों की भूमिका:

(1). विविधता एवं भेदभाव :- एन.सी.ई.आर.टी द्वारा निर्मित कक्षा– 6 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक "सामाजिक और राजनीतिक जीवन –1" में संकलित दूसरा अध्याय "विविधता एवं भेदभाव" हमको भारत जैसे बहुलवादी समाज के दो महत्वपूर्ण पहलुओं – "विविधता और भेदभाव" से अवगत कराता है। यह अध्याय न केवल छात्रों को इन अवधारणाओं से परिचित कराता है, बल्कि उन्हें यह सोचने पर भी मजबूर करता है कि कैसे विविधता हमारे समाज को समृद्ध करती है और कैसे भेदभाव एक बड़ी चुनौती है, जिससे निपटना आवश्यक है। यदि पाठ का अध्ययन करें, तो हमको ज्ञात होगा कि प्रस्तुत पाठ हमको **"रूढ़िवादी धारणाओं"** के बारे में, विशेषकर भारतीय समाज में स्त्रियों व पुरुषों के प्रति पाई जाने वाली रूढ़िबद्ध धारणाओं के बारे में बताता है। पाठ में हमको इस तथ्य से भी अवगत कराया गया कि कैसे हम लोग अक्सर विभिन्न समुदायों के लोगों के प्रति अपने मन में रूढ़िबद्ध धारणाएँ या पूर्वाग्रह स्थापित कर लेते हैं, जो आगे चलकर अक्सर भेदभाव का कारण बनती हैं। पाठ में वर्णित है कि कैसे हम लोग अक्सर ग्रामीण समुदाय के लोगों को आलसी, अंधविश्वासी और गंदे स्वीकार कर लेते है। ऐसी ही कुछ धारणाएं शहरी लोगों के प्रति भी पाई जाती हैं, जैसे कि शहरी लोग चालाक होते हैं उनका भरोसा नहीं किया जा सकता या शहरी लोगों को तो बस पैसों की चिंता होती है, आपसी संबंधों की नहीं। पाठ में भारतीय समाज में स्त्रियों व पुरुषों के प्रति पाए जाने वाली कुछ रूढ़िबद्ध धारणाओं का भी उल्लेख मिलता है, जैसे लड़कियाँ भावुक एवं मृदु स्वभाव की होती हैं, जो बात बात पर रोने लगती हैं और लड़कियों का मुख्य कार्य घर गृहस्थी संभालना और खाना बनाना होता है, जबकि लड़के बलिष्ठ, कम भावुक और साहसी होते हैं। वे कभी रोते नहीं और बहादुरी से सभी परिस्थितियों का सामना करते हैं। इसके साथ ही पाठ में समानता के लिए किए गए संघर्षों का भी उल्लेख मिलता है। समाज के वंचित वर्गों विशेषकर दलित, आदिवासी और महिलाओं द्वारा माँगे गए समानता के अधिकारों का वर्णन पाठ में विशेष रूप से किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप देश की आज़ादी के बाद देश के संविधान ने सभी नागरिकों को एक समान मानकर सभी को एक समान अधिकार प्रदान किए।

यदि पाठ में दी गई रूढ़िबद्ध धारणाओं के बारे में बात करें, तो इस विषय पर विद्यार्थियों से चर्चा करते समय हम हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध इससे संबंधित कविताओं और कहानियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे, जब अध्यापक विद्यार्थियों से स्त्री पुरुष के प्रति पाई जाने वाली रूढ़िबद्ध धारणाओं के बारे में कक्षा में चर्चा करे, तो उनको समझाने के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक के संकलित पाठ **"नौकर"** नामक पाठ का इस्तेमाल कर सकता है। इस पाठ के माध्यम से हम बच्चों

को यह समझा सकते हैं कि यह आवश्यक नहीं है कि घरेलू कार्य जैसे, झाड़ू लगाना, खाना बनाना इत्यादि केवल महिलाएं ही करेंगी, बल्कि इन कार्यों को कोई भी कर सकता है जैसा कि पाठ में गाँधी जी अपने आश्रम में स्वयं खाना भी बनाते थे, झाड़ू भी लगाते थे और रोटी बनाने के लिए आटा भी गूंदते थे। इसीप्रकार, **"झॉसी की रानी"** कविता के माध्यम से हम बच्चों को समझा सकते हैं कि बहादुरी और वीरता जैसे गुणों का संबंध किसी लिंग विशेष के व्यक्ति से नहीं होता, बल्कि कोई भी वीर और पराक्रमी हो सकता है, जैसा कि कविता में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों के विरुद्ध बहादुरी से लड़ते हुए दिखाया गया है। पाठ में रूढ़िबद्ध धारणाओं का उल्लेख करते समय इस बात को बताया गया है कि अक्सर हमारे समाज में शहरी लोगों और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए अलग–अलग तरह की रूढ़िबद्ध धारणाएं बना ली जाती हैं, जिनका कोई प्रमाण नहीं होता। जैसे शहरी लोग चालाक और भरोसे के लायक नहीं होते, उनको बस धन कमाने से प्रेम होता है या ग्रामीण लोग गंदे आलसी और अंधविश्वासी होते हैं। इस तथ्य को समझते समय हम कक्षा– 8 की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग– 3 में संकलित पाठ **"लाख की चूड़ियाँ"** का उल्लेख कर सकते हैं, जिसमें चूड़ियाँ बनाने वाले मनिहार बदलू काका शहरी महिलाओं के लिए कहते है कि शहरी महिलाओं की तो बात न करो, लला ! वहाँ तो सबकुछ होता है, शहरी महिलाएं तो अपने मर्दों के साथ हाथ में हाथ डालकर चलती भी हैं और फिर उनकी कलाई नाज़ुक होती है, लाख की चूड़ियाँ पहने तो मोंच न आ जाए। कहानी में बदलू काका द्वारा बोले गए इस कथन का इस्तेमाल हम बच्चों को रूढ़िबद्ध धारणाओं से अवगत कराते समय कर सकते हैं। हम बच्चों को विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इस तथ्य से अवगत करा सकतें कि हाथ में हाथ डालकर चलना कोई बुरी बात नहीं, बल्कि यह तो प्रेम भाव को दर्शाने का एक माध्यम हो सकता है और फिर सभी शहरी महिलाएं ऐसा करती भी नहीं और कभी–कभी ग्रामीण महिलाओं को भी ऐसा करते हुए देखा जा सकता है। इसी तरह कलाईयों का कमज़ोर होना या मज़बूत गांव या शहर पर निर्भर नहीं करता बल्कि अनेक दूसरे कारणों पर भी निर्भर करता है। सभी ग्रामीण महिलाएं स्वस्थ नहीं होती और सभी शहरी महिलाएं कमज़ोर नहीं होती। सभी जगह हर तरह की महिलाएं पाई जाती हैं।

(2) "लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना" :- एन.सी.ई.आर.टी द्वारा निर्मित कक्षा–7 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक "सामाजिक और राजनीतिक जीवन – 2" में संकलित "लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना" पाठ में समाज द्वारा लड़कों और लड़कियों पर बचपन से ही थोपी जाने वाली विभिन्न अपेक्षाओं और भूमिकाओं का विश्लेषण किया गया है। पाठ में यह बताता है कि कैसे समाज लिंग के आधार पर व्यवहार, पसंद और यहां तक कि करियर विकल्पों को भी निर्धारित करता है। पाठ में एक ओर तो भारतीय समाज में लड़के और लड़कियों के लिए चुनी जाने वाली अलग–अलग सामाजिकरण की प्रक्रियाओं पर रौशनी डाली गई है, तो दूसरी ओर लिंग आधारित रूढ़िवादी भूमिकाओं और असमान श्रम विभाजन पर भी प्रकाश डाला गया है। पाठ में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि कैसे घर की दहलीज़ के अंदर किए जाने वाले घर गृहस्थी से जुड़े कार्यों को महिलाओं के कार्य मान लिया जाता और अक्सर समाज में इन घरेलू कामों को काम माना ही नहीं जाता, जबकि घरेलू काम और परिवार के सदस्यों की देखभाल करना पूरे समय का काम है और इस कार्य को प्रारंभ और समाप्त करने का कोई निश्चित समय भी नहीं है। पाठ में इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि अक्सर समाज में इन घरेलू कार्यों को पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की अपेक्षा कम महत्व प्राप्त होता है। इसी संदर्भ में पाठ में एक छोटी

सी कहानी का उल्लेख मिलता है, जिसमें एक गृहणी को यह कहा जाता है कि वह काम नहीं करती, जबकि वह दिन भर घर की देखभाल में लगी रहती है। अपने काम के महत्व को बताने के लिए वह एक दिन के लिए घर गृहस्थी के कामों से छुट्टी ले लेती है, जिसके परिणामस्वरूप, घर में अफरा–तफरी का माहौल बन जाता है और सब उसके काम के महत्व को स्वीकार कर लेते हैं। इस संदर्भ में, कक्षा– 7 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक "वसंत भाग– 2" में संकलित **"खानपान की बदलती तस्वीर"** नामक पाठ को इस बात को समझने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है कि कैसे खाना बनाने के काम को केवल महिलाओं से संबद्ध करके देखा जाता है। पाठ में कहा गया है कि यद्यपि खानपान की संस्कृति में बदलाव आ रहे हैं और जल्दी पकने वाले खानों का चलन तेजी से बढ़ रहा है, जिसका लाभ सबसे ज्यादा गृहणियों को और काम करने वाली महिलाओं को हुआ है। अब वे आसानी से जल्दी खाना तैयार कर सकती हैं। हम इस पाठ के माध्यम से बच्चों से चर्चा कर सकते हैं कि क्या खाना बनाना केवल महिलाओं का ही कार्य है या कोई भी इसको बना सकता है। पाठ में इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि कैसे हमारे समाज में लड़के और लड़कियों की परवरिश में एक विशेष प्रकार का अंतर पाया जाता है, जो लड़के और लड़कियों के अचेतन मन में उनके लड़के और लड़की होने की पहचान को सुदृढ़ करता है। इस संदर्भ में हम बच्चों के समक्ष **"लाख की चूड़ियाँ"** नामक पाठ को उद्धृत कर सकते हैं जिनमें बदलू काका की पुत्री को केवल घर के काम करते, अतिथियों का सत्कार करते चित्रित किया गया हैं। पाठ में कहीं पर भी बदलू काका की पुत्री को चूड़ियों के व्यवसाय में अपने पिता का हाथ बटाते हुए चित्रित नहीं किया गया है। जब लेखक बदलू काका के घर जाता है, तो बदलू काका अपनी पुत्री से लेखक के लिए आम लाने को बोलते हैं। इसी संदर्भ में **"झाँसी की रानी"** कविता को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। इस कविता के माध्यम से हम बच्चों को इस तथ्य से अवगत करवा सकते हैं कि यद्यपि लड़कियों को बचपन से ही हमारे समाज में एक अलग तरह के वस्त्र, खेल और कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है, परंतु झाँसी की रानी ने इस रूढ़ियों को तोड़कर एक अलग तरह की जीवन शैली को चुना। वह उन खेलों के प्रति रुचि रखती थीं, जिनको आमतौर पर हमारे समाज में लड़कों के खेल या शौक माना जाता है। कविता में वर्णित है कि वह बचपन से ही तलवारबाज़ी, घुड़सवारी और तीर अंदाजी की शौकीन थी।

(3) "औरतों ने बदली दुनिया" :– एन.सी.ई.आर.टी द्वारा निर्मित कक्षा–7 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक "सामाजिक और राजनीतिक जीवन – 2" में संकलित **"औरतों ने बदली दुनिया"** नामक पाठ उन महिलाओं की कहानियों और योगदान पर केंद्रित है, जिन्होंने अपने दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत और साहस से समाज में बड़े बदलाव लाए हैं। यह प्रेरणादायक पाठ इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे सदियों से महिलाओं को कई सामाजिक बाधाओं, रूढ़ियों और भेदभाव का सामना करना पड़ा है, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण सफलता हासिल की है। पाठ इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कैसे कुछ महिलाएँ पारंपरिक लैंगिक रूढ़ियों से बाहर निकलकर उन क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही हैं, जिन्हें पहले केवल पुरुषों के लिए माना जाता था। पाठ में शिक्षा, विज्ञान, कला, राजनीति, खेल और अन्य कई क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को दर्शाया गया है। यह पाठ सिर्फ कुछ प्रसिद्ध महिलाओं (जैसे पंडित रमाबाई और रुकैया सखावत हुसैन) की कहानियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन साधारण महिलाओं के असाधारण कार्यों को भी उजागर करता है, जिन्होंने अपनी

लगन व कठिन परिश्रम से समाज की रूढ़ियों को तोड़कर अपनी समाज में अपनी एक अलग जगह बनाई। पाठ में झारखण्ड के एक गरीब आदिवासी परिवार की सत्ताइस वर्षीय लक्ष्मी लारा का भी वर्णन मिलता है, जिन्होंने समाज की उस धारणा रूढ़िवादी धारणा को तोड़ा जिसके तहत यह माना जाता था कि रेल का इंजन केवल आदमी ही चलाते हैं। वह उत्तरी रेलवे की पहली महिला इंजन चालक बनी थीं।

यदि प्रस्तुत पाठ को समझने के लिए हिंदी साहित्य को आधार बनाया जाए, तो कहना अनुचित न होगा कि प्रस्तुत पाठ को समझने के लिए हम हिंदी की पाठ्यपुस्तक "वसंत भाग– 3" में संकलित **"जहाँ पहिया है"** नामक पाठ का सहारा ले सकते हैं, क्योंकि जिस प्रकार प्रस्तुत पाठ "औरतों ने बदली दुनिया" में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार अनेक औरतों ने सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर उन क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई, जो पुरुषों के क्षेत्र माने जाते थे, ठीक इसी तरह "जहाँ पहिया है" नामक पाठ में भी कुछ महिलाओं ने अपनी गतिशीलता को बढ़ाने के लिए तथा समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयास किए और इसके लिए उन्होंने साईकिल को चुना था, जिससे वे सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक रूप से सशक्त हुई। पाठ में यह भी बताया गया है कि साईकिल आंदोलन से क्षेत्र की महिलाओं को संगठित होने का अवसर भी मिला था और वे तमाम जाति, धर्म, भाषा व संस्कृति का भेदभाव भुलाकर परस्पर मिलने लगीं थी। इस प्रकार वे संगठित हुई और उनमें एकता का भाव पैदा हुआ जो किसी भी आंदोलन के लिए परम आवश्यक होता है। पाठ में इस बात का भी वर्णन मिलता है कि प्रारम्भ में जब इन महिलाओं ने साईकिल चलाना आरम्भ किया था, तो समाज द्वारा इनको तिरस्कार का सामना करना पड़ा था, लेकिन धीरे–धीरे इनको सामाजिक स्वीकृति भी प्राप्त हो गई थी, जो लैंगिक समानता की दिशा में एक सकारात्मक कदम था। इसी संदर्भ में, बचेंद्री पाल द्वारा रचित **"एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा"** (स्पर्श भाग– 1 से उद्धृत) नामक पाठ को भी उद्धृत किया जा सकता है, जिसमें उनकी एवरेस्ट पर चढ़ाई के रोमांचक अनुभवों का वर्णन मिलता है। इस पाठ के माध्यम से हम बच्चों को समझा सकते हैं कि यह यात्रावृत्तांत केवल माउंट एवरेस्ट को फतह करने की एक कहानी नहीं है, बल्कि यह एक महिला के पितृसत्तात्मक समाज द्वारा थोपी गई रूढ़ियों एवं सीमाओं को तोड़ने का एक प्रतीक भी है, *क्योंकि* जिस समय बचेंद्री पाल एवरेस्ट पर चढ़ने का सपना देख रही थीं और उसे साकार कर रही थीं, उस समय भारतीय समाज में महिलाओं से संबंधित एक निश्चित सोच प्रबल थी। उनसे घर संभालने और पारंपरिक भूमिकाओं का निर्वहन करने की ही अपेक्षा की जाती थी। पर्वतारोहण जैसे 'पुरुष–प्रधान' क्षेत्र में कदम रखना ही अपने आप में एक क्रांतिकारी कदम था। पाठ के माध्यम से हम बच्चों को समझा सकते हैं कि बचेंद्री पाल ने पितृसत्ता की इस धारणा को तोड़ा कि महिलाएं शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से कमजोर होती हैं या वे केवल कुछ विशेष कार्यों के लिए ही बनी हैं। उन्होंने साबित किया कि इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प से महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों के समान या उनसे बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं। बचेंद्री पाल की एवरेस्ट यात्रा की सफलता ने न केवल उन्हें व्यक्तिगत रूप से सशक्त किया, बल्कि यह भारत और दुनिया भर की असंख्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनी। इसतरह, उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज की उन अदृश्य दीवारों को ढहाकर एक ऐसा पथ प्रशस्त किया, जिस पर चलकर अन्य महिलाएं भी अपने सपनों को पूरा करने और पारंपरिक बेड़ियों को तोड़ने के लिए प्रेरित हुईं।

(4). "हाशियाकरण की समझ" :- एन.सी.ई.आर.टी की कक्षा- 8 की पाठ्यपुस्तक "सामाजिक और राजनीतिक जीवन - 3" में संकलित अध्याय "हाशियाकरण की समझ" का भी उल्लेख करना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है, क्योंकि प्रस्तुत पाठ में हाशियाकरण की अवधारणा को समझाते हुए कुछ ऐसे समुदायों का उल्लेख किया गया है, जिनको समाज में अक्सर हाशियाई या अलग-थलग महसूस करवाया जाता है। यद्यपि पाठ में ऐसे समुदायों के रूप में आदिवासी समुदायों और अल्पसंख्यक समुदायों विशेषकर मुस्लिम समुदाय का ही उल्लेख मिलता है, लेकिन इस पाठ को पढ़ाते समय हम बच्चों को इस तथ्य से अवगत करवा सकते हैं कि हमारे समाज में आदिवासी व अल्पसंख्यक समुदायों के अलावा भी कई ऐसे समुदाय आते हैं, जिनको हाशियाई समुदायों की श्रेणी के अंतर्गत रखा जाता है। ऐसा ही एक समुदाय है - स्त्री समुदाय, जो सदियों से समाज द्वारा किए गए अन्याय, शोषण व तिरस्कार को झेलती आ रही हैं। अत: इस पाठ को महिलाओं से जोड़कर भी पढ़ाया जा सकता है और इसके लिए हम कक्षा- 7 की हिंदी की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग- 2 में संकलित कविता **"कठपुतली"** की सहायता ले सकते हैं। कविता के माध्यम से हम बच्चों से चर्चा कर सकते हैं कि कविता में कठपुतली को जिस प्रकार महिलाओं के परिधान में चित्रित किया गया है, उससे जाहिर होता है कि वे महिलाओं के रूपक के रूप में प्रदर्शित की गई हैं। हम बच्चों से इस बात पर भी चर्चा कर सकते हैं कि कविता में कठपुतली के इर्द-गिर्द जो धागें हैं उनको वह तोड़ देना चाहती हैं, क्योंकि वे धागे उसको नियंत्रित करते हैं और वे नहीं चाहती कि कोई उनको नियंत्रित करे। हम बच्चों से चर्चा कर सकते हैं कि कविता में धागों को समाज में व्याप्त रूढ़ियों, परंपराओं के रूप में चित्रित किया है।

(5) "जब जनता बग़ावत करती है: 1857 और उसके बाद":- 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम को गहराई से समझने के लिए एन.सी.ई.आर.टी की कक्षा - 8 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक **"हमारा अतीत भाग- 3"** में संकलित पाठ **"जब जनता बगावत करती है: 1857 और उसके बाद"** एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ 1857 के सिपाही विद्रोह और उसके बाद के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों का एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। यह पाठ हमें बताता है कि कैसे भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों ने धीरे-धीरे जनता में असंतोष पैदा किया, जिसने अंतत: एक बड़े विद्रोह का रूप ले लिया, जिसे अक्सर भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखा जाता है। पाठ की शुरुआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बनाई गई विभिन्न ऐसी दमनकारी नीतियों से होती है, जिन्होंने न केवल भारत के अभिजात्य वर्ग, बल्कि जन-सामान्य के जीवन को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित किया था। एक तरफ तो कंपनी अपनी हड़प नीति के तहत धीरे-धीरे भारत के देसी राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहती थी, तो दूसरी तरफ समाज सुधार के नाम पर कुछ ऐसी भी नीतियाँ बनाई गईं, जिनका रूढ़िवादी भारतीयों ने अपनी परंपराओं और धर्म में हस्तक्षेप बताकर विरोध किया। उदाहरण के लिए, सती प्रथा का उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन तथा सैनिकों के लिए समुद्री यात्रा अनिवार्य करना ऐसी ही कुछ नीतियाँ थीं, जिन्होंने भारतीय आम जन-मानस के बीच में असंतोष की ज्वाला प्रज्वलित कर दी थी। इन सभी कारकों ने मिलकर जनता में असंतोष की भावना को गहरा किया। असंतोष की यह चिंगारी तब और अधिक भड़की जब सिपाहियों के बीच यह अफवाह फैली कि नई राइफलों के कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई है, जो हिंदू और मुस्लिम दोनों सैनिकों की

धार्मिक भावनाओं को आहत करती थी। मंगल पांडे नामक एक सिपाही ने बैरकपुर में इन कारतूसों का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया और ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला कर दिया, जिसके बाद उसे फाँसी दे दी गई। यह घटना विद्रोह की शुरुआत थी। धीरे-धीरे, मेरठ से शुरू होकर, यह विद्रोह पूरे उत्तरी भारत में फैल गया। दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झांसी और फैजाबाद जैसे प्रमुख केंद्र इस विद्रोह की चपेट में आ गए। विभिन्न वर्गों के लोग, जिनमें सिपाही, किसान, जमींदार, कारीगर और यहां तक कि कुछ रियासतों के शासक भी इस विद्रोह में शामिल हुए। बहादुर शाह जफर, अंतिम मुगल सम्राट, को विद्रोहियों ने अपना नेता घोषित किया, जिससे इस आंदोलन को एक प्रतीकात्मक केंद्रीयता मिली। पाठ में रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहेब और बेगम हजरत महल जैसे प्रमुख विद्रोहियों के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। इन नेताओं ने ब्रिटिश सेना के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और लोगों को एकजुट करने का प्रयास किया। हालाँकि, विद्रोहियों के बीच समन्वय की कमी, हथियारों की कमी और ब्रिटिशों की बेहतर सैन्य शक्ति के कारण, धीरे-धीरे विद्रोह को कुचल दिया गया। 1857 के विद्रोह के बाद के परिणामों पर भी पाठ में विस्तार से चर्चा की गई है। ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी से भारत का शासन सीधे अपने हाथ में ले लिया। रानी विक्टोरिया ने एक घोषणा पत्र जारी किया, जिसमें भारतीयों को कुछ अधिकार देने और भविष्य में उनकी धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं में हस्तक्षेप न करने का वादा किया गया। भारतीय सेना का पुनर्गठन किया गया, जिसमें यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गई और भारतीय सैनिकों की संख्या कम कर दी गई। इसके अलावा, "बांटो और राज करो" की नीति को और अधिक मजबूती से अपनाया गया, जिससे भविष्य में ऐसे विद्रोहों को रोका जा सके। संक्षेप में, यह पाठ ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ भारतीय प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण गाथा है, जो हमें बताता है कि कैसे ब्रिटिश नीतियों ने भारतीयों को अपनी पहचान और जीवन शैली के लिए लड़ने पर मजबूर किया। यही पाठ का संक्षिप्त सार है। जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2005 में कहा गया है कि विभिन्न विषयों की दीवारों को नीचा कर देना चाहिए और ज्ञान को पृथक करके नहीं बल्कि एकीकृत करके पढ़ाया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी उस ज्ञान को गहनता से आत्मसात् कर सकें। इस दृष्टि से यदि प्रस्तुत पाठ पर विचार किया जाए तो हम कह सकते हैं कि इस पाठ के मर्म को भलीभांति समझने के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान कृत हिंदी की सुप्रसिद्ध कविता **"झाँसी की रानी"** और चपला देवी द्वारा रचित पाठ **"नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया"** की सहायता लेनी चाहिए, क्योंकि दोनों ही पाठ न केवल प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं, बल्कि उस दौर के सामाजिक, राजनीतिक और भावनात्मक परिदृश्य से भी हमको अवगत कराते हैं। कविता **"झाँसी की रानी"** बच्चों को 1857 के विद्रोह के केंद्रीय पात्रों में से एक, रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य, बलिदान और नेतृत्व से परिचित कराती है। पाठ में वर्णित विद्रोह के प्रमुख कारणों, जैसे कि सहायक संधि और डलहौजी की हड़प नीति को भी कविता के माध्यम से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब कविता में आता है- "बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी," तो यह बच्चों को रानी के अदम्य साहस का परिचय देता है। शिक्षक इस अंश का उपयोग करते हुए, झाँसी की रियासत पर अंग्रेजों के कब्जे के प्रयासों और रानी के प्रतिरोध की कहानी को विस्तार से बता सकते हैं। कविता में वर्णित युद्ध के दृश्य, जैसे "चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी," बच्चों को विद्रोह की भयानकता और उसके व्यापक प्रभाव का अनुभव कराते हैं। यह कविता बच्चों को

यह समझने में मदद करती है कि किस प्रकार एक महिला शासिका ने अपने राज्य और जनता की स्वतंत्रता के लिए अंतिम साँस तक संघर्ष किया, जो पाठ में वर्णित विद्रोह के व्यापक स्वरूप को समझने में सहायक होगा। इससे बच्चे केवल तथ्यों को रटेंगे नहीं, बल्कि रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान को भावनात्मक स्तर पर महसूस कर पाएंगे, जिससे पाठ का मर्म उनके हृदय में उतर पाएगा। वहीं, चपला देवी द्वारा रचित पाठ **"नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया"** 1857 के विद्रोह के क्रूर और हृदय विदारक पहलू को सामने लाती है। यह कविता बच्चों को ब्रिटिश हुकूमत की बर्बरता और दमनकारी नीतियों से अवगत कराती है। पाठ में जहाँ विद्रोह के बाद अंग्रेजों द्वारा किए गए दमन और बदला लेने की कार्रवाई का उल्लेख है, वहीं यह कविता एक विशिष्ट घटना के माध्यम से उस क्रूरता को जीवंत करती है। मैना के बलिदान की कहानी बच्चों को यह समझाएगी कि विद्रोह के बाद अंग्रेजों की बदला लेने की कार्यवाहियों में न केवल राजा, रानी शिकार हुए, बल्कि आम जनता और मासूम बच्चों को भी अंग्रेजों के अत्याचारों का सामना करना पड़ा था। शिक्षक इस पाठ का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों को इस तथ्य से अवगत करा सकते हैं कि विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने क्रूर से क्रूर निर्मम नीतियों को अपनाने से भी गुरेज नहीं किया था, जिनमें मासूम लोगों पर अत्याचार करना, स्वतंत्रता संग्रामियों की हत्या करवाना, उनके घरों को गिराना और गाँवों में आग लगवाना आदि शामिल था। इसप्रकार, उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि हिंदी के इन दोनों ही पाठों का संयुक्त प्रयोग बच्चों को 1857 के विद्रोह का एक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करेगा। " झाँसी की रानी" जहाँ शौर्य और प्रतिरोध की गाथा सुनाती है, वहीं "नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया" उसके दुखद और बलिदान भरे पक्ष को दर्शाती है। इन दोनों पाठों के माध्यम से बच्चे यह समझेंगे कि विद्रोह एक बहुआयामी घटना थी, जिसमें विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों के लोगों ने अलग–अलग कारणों से भाग लिया था और जिसके परिणाम स्वरूप अपार कष्ट सहने पड़े थे। शिक्षक इन दोनों पाठों के महत्वपूर्ण अंशों को बच्चों के समक्ष पढ़कर सुना सकते हैं, उन पर चर्चा कर सकते हैं, और बच्चों को उन पात्रों के भावनाओं को समझने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस प्रकार, बच्चे इन दोनों पाठों के माध्यम से उस ऐतिहासिक कालखंड के सामाजिक मूल्यों, देशभक्ति की भावना और बलिदान की पराकाष्ठा को एक जीवंत और भावनात्मक अनुभव के रूप में आत्मसात कर पाएंगे।

(6). "महिलाएँ, जाति एवं सुधार" :- कक्षा– 8 की पाठ्यपुस्तक "हमारा अतीत– 3" में संकलित पाठ **"महिलाएँ, जाति एवं सुधार"** में मुख्य रूप से 19 वीं और 20 वीं सदी के भारतीय समाज में महिलाओं की दयनीय सामाजिक स्थिति को दर्शाया गया है। साथ ही, पाठ में समाज सुधारकों द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु किए गए प्रयासों पर भी चर्चा की गई है। पाठ में हमको इस बात से अवगत कराया गया कि उन्नीसवीं सदी के भारतीय समाज में बहुत सी ऐसी कुरीतियाँ विद्यमान थीं, जिन्होंने महिलाओं की स्थिति को अत्यंत दयनीय एवं चिंताजनक बना दिया था। पाठ में हमको बताया गया है कि तत्कालीन समाज में बाल विवाह का होना बहुत सामान्य था। महिलाओ का विवाह अक्सर उनसे उम्र में कई गुना बड़ी आयु के पुरुष से कर दिया जाता था। पाठ में हमको इस तथ्य से भी अवगत कराया गया है कि तत्कालीन समाज में विधवा पुनर्विवाह पूरी तरह से निषिद्ध था, जिसके परिणामस्वरूप समाज में विधवाओं को बहुत कठिनाईयों का समाना करना पड़ता था। समाज में विधवाओं को अशुभ मानकर उनको किसी भी धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों से दूर रखा जाता था। पाठ में सती प्रथा का भी उल्लेख मिलता है। पति की मृत्यु के पश्चात उसकी विधवा को पति की चिता के साथ जला कर मार दिया जाता था और इस कृत को करने के बाद महिला को सती कहकर महिमा मंडित किया जाता था। पाठ में विशेष रूप से बताया गया है, उस युग में

महिलाओं के पढ़ने लिखने को शुभ नहीं माना जाता था, क्योंकि समाज में यह धारणा विद्यमान थी कि यदि औरत पढ़-लिख जायगी तो वह जल्दी विधवा हो जाएगी। इसी तरह, पाठ में पण्डिता रमाबाई, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर और ज्योतिबाफूले जैसे समाज सुधारकों का भी वर्णन मिलता है जिन्होंने स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु अथक प्रयास किए, जिसके परिणामस्वरूप, बीसवीं सदी तक आते आते महिलाओं की स्थिति में सुधार होने लगे थे। संक्षेप में, यह पाठ भारतीय समाज में महिलाओं की पिछली दयनीय स्थिति, उन पर थोपी गई सामाजिक बंदिशों और समाज सुधारकों द्वारा उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि कैसे समय के साथ महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए जागरूकता बढ़ी और सुधार हुए। प्रस्तुत पाठ "महिलाएं, जाति एवं सुधार" को कक्षा- 10 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग- 2 में संकलित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पाठ **"स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन"** से जोड़कर समझना चाहिए, क्योंकि दोनों ही पाठों में उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के प्रारंभिक चरण में महिलाओं की शिक्षा की बात कही गई है। "स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन" नामक पाठ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी उन सभी पुरातनपंथी विचारों का खंडन करते हैं, जो स्त्री-शिक्षा को व्यर्थ अथवा समाज के विघटन का कारण मानते हैं। पाठ में लेखक इस धारणा को गलत सिद्ध करते है, जिसके तहत यह तर्क दिया जाता है कि यदि महिला शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण होती तो पुराने समय में महिलाओं को शिक्षा से क्यों दूर रखा गया, जबकि प्राचीन संस्कृत कवियों के नाटकों में महिलाएं संस्कृत नहीं, बल्कि अपढ़ों की भाषा यानी प्राकृत बोलती हैं। लेखक पाठ में समाज में व्याप्त स्त्री शिक्षा के विरोधी इन सभी कुतर्कों का खंडन करते हैं। इस पाठ को पढ़ाने के बात बच्चों से उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में स्त्री शिक्षा के संदर्भ में चर्चा की जा सकती है। इसीप्रकार कक्षा- 9 की हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक "कृतिका भाग- 1" में संकलित जगदीश चंद्र माथुर की एकांकी **"रीढ़ की हड्डी"** के माध्यम से हम स्त्री-शिक्षा के संदर्भ में बच्चों से चर्चा कर सकते हैं, क्योंकि यह एकांकी भी हमको इस तथ्य से अवगत कराती है कि न केवल उन्नीसवीं सदी में बल्कि वर्तमान समय में भी बहुत से दकियानूसी मानसिकता वाले लोग स्त्री शिक्षा को अच्छा नहीं मानते। वर्तमान युग में भी बहुत से संकीर्ण मानसिकता रखने वाले लोग विवाह के अवसर पर ज्यादा शिक्षित वधू को पसंद नहीं करते क्योंकि ऐसे पुरातनवादी मानते हैं कि यदि वधू शिक्षित होगी तो उसपर नियंत्रण करना कठिन होगा। "रीढ़ की हड्डी" एकांकी के माध्यम से हम बच्चों को यह संदेश दे सकते हैं कि शिक्षा और आत्म-विश्वास से भरपूर लड़कियां समाज में अपना स्थान बना सकती हैं और समाज की उस पिछड़ी और रूढ़िवादी कुरीतियों का मुंहतोड़ जवाब दे सकती हैं, जो लड़कियों को केवल विवाह के लिए एक वस्तु मानती है।

(7). "जाति, धर्म और लैंगिक मसले" :- कक्षा- 10 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक "लोकतांत्रिक राजनीति - 2" में संकलित पाठ **"जाति, धर्म और लैंगिक मसले"** पाठ सामाजिक असमानताओं और भेदभाव के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है, जो भारतीय समाज में गहराई तक समाए हुए हैं। यह पाठ मुख्य रूप से लैंगिक मसले (Gender Issues), धर्म (Religion) और जाति (Caste) के आधार पर भारतीय समाज में होने वाले भेदभावों और असमानताओं की पड़ताल करता है। पाठ लैंगिक असमानता से शुरू होता है, जहाँ पुरुष और महिला के बीच जैविक अंतर के अलावा सामाजिक रूप से निर्धारित भूमिकाओं और अपेक्षाओं पर प्रकाश डाला गया है। पाठ में इस महत्वपूर्ण तथ्य पर भी पाठ में प्रकाश डाला गया है कि कैसे लैंगिक भूमिकाएँ समाज द्वारा बनाई जाती हैं और महिलाओं को पुरुषों से कमतर आँका जाता है, जिसके परिणाम स्वरूप महिलाओं को घर की दहलीज़ तक सीमित कर दिया जाता है और वे संगठित नहीं हो पाती। इसके विपरीत, पुरुषों को

घर के बाहर के कामों के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे वे न केवल संगठित हो जाते हैं बल्कि तमाम सामाजिक संस्थाओं पर मर्दों का आधिपत्य स्थापित हो जाता है। पाठ में इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि कार्यस्थलों और राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम होने के कारण कैसे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की आवाज़ कमजोर पड़ जाती है। इसके अतिरिक्त पाठ में परिवारों में जन्म के समय पुत्र प्राप्ति की प्रबल अभिलाषा का पाया जाना, कन्या भ्रूण हत्या तथा महिलाओं के खिलाफ होने वाली घरेलू हिंसा पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। पाठ में कन्या भ्रूण हत्या जैसे गंभीर विषय को कुछ इस प्रकार से दर्शाया गया है –

"भारत के अनेक हिस्सों में माँ बाप को सिर्फ लड़के की चाह होती है। लड़की को जन्म लेने से पहले ही खत्म कर देने के तरीके इसी मानसिकता से पनपते हैं। इससे देश का लिंग अनुपात [प्रति हज़ार लड़कों पर लड़कियों की संख्या] गिरकर 914 रह गया है। कई जगह तो यह अनुपात गिरकर 850 और कहीं कहीं तो 800 से भी नीचे चला गया है।"

(लोकतांत्रिक राजनीति भाग - 2, पृष्ठ संख्या- 44)

इसी प्रकार, पाठ में महिलाओं के खिलाफ होने वाली घरेलू हिंसा का चित्रण कुछ इस प्रकार से किया गया है –

"महिलाओं के उत्पीड़न, शोषण और उन पर होने वाली हिंसा की खबरें हमें रोज़ पढ़ने को मिलती हैं। शहरी इलाके तो महिलाओं के लिए खास तौर से असुरक्षित हैं क्योंकि वहाँ भी उन्हें मारपीट तथा अनेक तरह की घरेलू हिंसा झेलनी पड़ती है।"

(लोकतांत्रिक राजनीति भाग - 2, पृष्ठ संख्या-44)

इस पाठ को यदि साहित्य के माध्यम से समझा जाए, तो हम कक्षा– 9 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–1 में संकलित पाठ **"मेरे बचपन के दिन"** को आधार बना सकते हैं, क्योंकि इस पाठ में एक स्थान पर कन्या भ्रूण हत्या का उल्लेख मिलता है। पाठ में लेखिका महादेवी वर्मा लिखती है कि अपने खानदान में काफी समय के बाद वह एक कन्या के रूप में पैदा हुई थी इसलिए उसको वह सब नहीं झेलना पड़ा जो समाज में दूसरी लड़कियों को झेलना पड़ता था। पाठ में आगे लेखिका बताती हैं कि उनके परिवार में काफी समय के बाद कोई लड़की पैदा हुई थी। सुनते हैं उससे पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज दिया जाता था। लेखिका के यह वचन निश्चित रूप से कन्या भ्रूण हत्या की ओर इशारा करते हैं। इसी तरह यदि महिलाओं पर होने वाली घरेलू हिंसा की बात करें, तो कक्षा– 10 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक "क्षितिज भाग– 2" में संकलित **"कन्यादान"** नामक कविता के माध्यम से इस तथ्य को भावनात्मक रूप से समझा जा सकता है। कविता में एक माँ अपनी पुत्री को उसकी विदाई के अवसर पर सीख देती हुई कहती है कि मेरी बेटी ! यह सुंदरता नश्वर है, इसलिए कभी इसपर

इतराना नहीं चाहिए। असली सुंदरता तो मन की सुंदरता होती है। इसके बाद माँ अपनी पुत्री से बोलती है कि बेटी ! आग का प्रयोग सिर्फ खाना बनाने और रोटियों को सेकने के लिए ही करना, लेकिन यदि आग का प्रयोग जलने या जलाने के लिए करते हुए देखो तो तुरंत इसका विरोध करना। कविता में इस भाव को कुछ इस तरह से दर्शाया गया है –

"माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेकने के लिए है
जलने के लिए नहीं

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।"

(क्षितिज भाग 2, पृष्ठ संख्या- 50)

वास्तव में कविता की यह पंक्तियाँ उन लोगों पट कटाक्ष हैं, जो दहेज के लालच में आकर अपनी बहुओं को आग के हवाले करने से भी नहीं हिचकिचाते हैं।

निष्कर्ष:- इसप्रकार, उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम सकते हैं कि एन.सी.ई.आर.टी द्वारा निर्मित कक्षा VI से X तक की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें जेंडर संबंधी मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करती हैं और इन मुद्दों की गहन समझ में हिंदी की पाठ्यपुस्तकों की भूमिका अपरिहार्य है। यदि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए जेंडर संबंधित विभिन्न विषयों को हिंदी की कहानियों एवं कविताओं से संबद्ध करके बच्चों को पढ़ाया जाए, तो विषयों के इस सहयोगात्मक दृष्टिकोण से छात्र जेंडर संबंधी जटिलताओं को अधिक गहनता और समग्रता से समझ सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. एन.सी.ई.आर.टी. (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
2. एन.सी.ई.आर.टी. (2019–20), वसंत भाग– 1, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

3. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), वसंत भाग- 2, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
4. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), वसंत भाग- 3, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
5. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), क्षितिज भाग- 1, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
6. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), क्षितिज भाग- 2, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
7. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), कृतिका भाग- 1, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
8. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन -I क्षितिज भाग-2, हिंदी की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
9. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन -II, सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
10. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन -III, सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
11. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), हमारा अतीत - III , सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
12. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), लोकतांत्रिक राजनीति - II, सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
13. एन.सी.ई.आर.टी. (2019-20), सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन - III, सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली